शिक्षा की नई चुनौतियाँ

15 अगस्त 1947 में भारत आज़ाद होने के बाद हमारे शिक्षा क्षेत्र में कई सारा बदलाव हम देख सकता है। ज्ञान प्राप्त करना इस युग में अनिवार्य है। हमारा राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी ने कहा है कि "जिज्ञासा के बिना ज्ञान नहीं होते"। ज्ञान से ही हम इस दुनिया में सुख से जी पाएँगे। ज्ञान प्राप्त करने के लिए शिक्षा की बहुत ज़रूरत है। शिक्षा, आज नई-नई चुनौतियों का सामना कर रहा है।

पहला चुनौती है 'बच्चों को विद्यालय न भेजना'। शिक्षा क्षेत्र के आगे बढ़ने के लिए छात्रों का बहुत बड़ा भूमिका है। अगर छात्र नहीं है, तो शिक्षा भी नहीं है। कई जगहों में बच्चे स्कूल नहीं जाते है। कई जगहों में सिर्फ़ लड़कियां

को स्कूल नहीं भेजती है। भारत में 50 प्रतिशत से ज़्यादा लोग स्त्रियाँ है और अगर वे शिक्षित नहीं होंगे तो वे हमारे देश की प्रगति के लिए भी काम नहीं कर पाएँगे। यह हमारे देश की प्रगति पर हानिकारक चोट पहुँचाएगा। क्रिस्टीन लगार्ड' जी की एक भाषण में उन्होंने कहा है कि शिक्षा स्त्रियों की उद्धारण के लिए बहुत ज़रूरी है। परन्तु हमारे देश के कई जगहों में स्त्रियाँ अनपढ़ है। कई लड़के भी शिक्षा प्राप्त न करके छोटे-छोटे काम करके अपने ज़िंदगी दुःख में जीते हैं। इसलिए शिक्षा की एक चुनौती यह ही है।

जन्म और मौत के बीच हमें मिलनेवाली इस छोटी समय जो हम इस सुंदर-सी धरती पर बिताते हैं, उसे ही हम ज़िंदगी बुलाते हैं। उस छोटी-सी समय

में हम नशीली पदार्थों का उपयोग करके जिंदगी की शांति बदबाद करते हैं।

शिक्षा की अगली चुनौती है 'नशीली चीज़ों का उपयोग'। हमारे देश के युवा पीढ़ी आज नशीली पदार्थों के जंजीरों में फँस गए हैं। आजकल एक भी ऐसा दिन नहीं है जब हम अकबारों में एम. डी. एम. ए, हेरोयिन जैसे ज़हरीला नशीली पदार्थों का उपयोग करनेवाले लोगों को कैद करने की खबर नहीं सुनते। विद्यालयों में भी आज यह ज़हर पहुँच रहा है। कोविड-19 जैसे बीमारियों की तरह आज ज़हरीली नशीली पदार्थों का उपयोग बढ़ रहा है। यह भी शिक्षा की एक चुनौती है। आजकल विद्यालयों के पुस्तकों में- काम करके, पैसा कमाकर, जिंदगी में सुख प्राप्त करने के बारे में पढ़ाते हैं। नशीली

चीज़ों के विरुद्ध खड़ा होने के लिए भी ~~विद्यालयों में~~ स्कूल में बच्चों को पढ़ाना ज़रूरी है। एन.एस.एस जैसे सामाजिक सेवा संघटना नशीली पदार्थों के विरुद्ध शुरू किया हुआ जुलूस में यह नारा ~~बना~~ बनाया है कि 'ज़िंदगी ही नशा है'। नशीली पदार्थ के उपयोग से बच्चे शिक्षा से दूर हो जाता है और अपने माँ-बहन को न पहचानकर क्रूर कार्य करते है। डॉ. हार्डिन. बी. जेम्स जी ने नशीली पदार्थों के विरुद्ध एक निबंध लिखा है जिसमें उन्होंने कहा है कि एक व्यक्ति नशीली पदार्थ का उपयोग करने के बाद अपने मन की विकारों को तक समझ नहीं पाते है। फिर वह ~~इंसा~~ इंसान कोई और बन जाता है। छात्रों के बीच बड़ी संख्या में फैलने के कारण नशीली चीज़ों का उपयोग भी शिक्षा की एक नई चुनौती है।

शिक्षा की अगली नई चुनौती यह है एक छात्र स्कूल में शिक्षा प्राप्त करके काम करने जाए तो वह अपना काम खुद करने लगता है। पहले तो माँ-बाप उनका सहायता करते होंगे, पर जब वह काम अकेले करने लगते है तब उनको वह बहुत मुश्किल महसूस होता है। इसलिए विद्यालयों में ज्ञान बाँटना नहीं बल्कि उस ज्ञान से जिंदगी में कुछ काम करने के लिए भी सिखाना है। इसके लिए खास तरीके से शिक्षित अध्यापकों की जरूरत है। अंग्रेजी के प्रमुख रचयिता एंटन चेखोव ने कहा है "उस ज्ञान से कोई लाभ नहीं जिसे आप काम में नहीं लाते"। इसलिए स्कूल में ज्ञान के साथ काम भी सिखाना जरूरी है।

छात्रों को पढ़ाने में असमर्थ अध्यापक भी शिक्षा की नई चुनौती है।

वह अध्यापक बड़े-बड़े कॉलेजों से बि.एस.सी और एम.एस.सी लेते है परंतु बच्चों को पढ़ाने में असमर्थ होते है। यह छात्रों पर बहुत बुरी प्रभाव डाल सकता है। इसलिए यह शिक्षा की नई चुनौतियों में ~~से~~ से एक जरूर है।

हमारे देश के सरकारी विद्यालयों में ~~आठवीं कक्षा~~ कई बच्चों को 'मिड डे मील' नामक प्रक्रम से खाना मुफ़्त देते है। परंतु हमारे केरल के तिरुवनंतपुरम नामक जिले से कुछ दिन पहले एक खबर सामाजिक माध्यमों में तेज़ी से फैल रहा था। एक ~~प्रधान~~ प्राचार्य अपने विद्यालय के बच्चों को ऐसे खाना देने के लिए अपनी हाथ से पैसा दे रहे थे, सरकार से पैसा मिल नहीं रहे थे। आगे उन्होंने कहा कि

अगर ऐसा चलता रहा तो उस स्कूल में 'मिड डे मील' नामक प्रक्रम को रोकना पड़ेगा। उसकी रुकावट बच्चों को अपनी हक से वंचित करने की समान है। इसलिए स्कूल के छात्रों को दोपहर का भोजन जो अब तक दे रहा था, वह रोकना शिक्षा के एक नई चुनौती है। कई सारे स्कूलों में अभी भी यह प्रक्रम चल रहा है पर सारा स्कूल एक जैसा नहीं है। छोटे बच्चों को स्कूल में खाना न देना भविष्य में बहुत बड़ा नुकसान के कारण बनेंगे। कई माता-पिता अपने बच्चों को भूखा न देखने के लिए स्कूल में भेजते थे, आगे वे स्कूल नहीं आएँगे और घरों में रहकर भूखा मरेंगे। इस यह शिक्षा की एक नई चुनौती है।

शिक्षा की अगली नई चुनौती है छात्रों के बीच होनेवाला भेदभाव।

ऊँची जाति के एक लड़के से नीची जाति के एक लड़के को थप्पड़ मारनेवाले एक अध्यापिका के बारे में हमने अकबारों में कई दिनों के पहले पढ़ा था। यह लोग जाति-प्रथा को अभिशाप बनाते है। जाति में नीची होने के कारण कुरसी पर नहीं बल्कि जमीन पर बैठकर पढ़ने के लिए मजबूर हुए कई शख्स हमारे समाज में है। उसका बहुत बड़ा उदाहरण है डा. बी.आर. अम्बेद्कर। उन्होंने परंतु हमारे देश का नाम रोशन किया। इसलिए जाति के नाम में भेदभाव शिक्षा की एक मुख्य चुनौती है।

कबीरदास ने एक 'दोहे' में कहा है कि भक्ति करनेवाले की जाति या रंग भगवान न देखना, ~~परंतु~~ सिर्फ़ उनका मन देखता है। हिंदी के प्रसिद्ध्ध रचयिता श्री प्रेमचंद की

कहानी 'ठाकुर का कुआँ' में भी जाति के नाम पर पीडित होनेवाले दो व्यक्तियों की बात कहते है। विनोदकुमार शुक्ल की कविता 'हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था' में भी कवि कहते हैं कि हम जब किसी व्यक्ति का मदद करते हैं तब उनका जाति या ओहदा नहीं देखनी चाहिए। आज के समाज में बड़ी संख्या में अकबारों में खबर सुनने की कारण 'जाति-प्रथा' भी शिक्षा की एक नई चुनौती है।

अगली चुनौती है 'गाँवों में गाड़ियों का अभाव'। इसके कारण कई बच्चे बहुत कष्ट उठाकर जीते है। सुबह 9 या 10 बजे बहुत सारे बच्चों को लेकर जाने वाला छोटा 'ओटो रिक्शा' हमारे देश में कहीं भी हम देख सकते हैं। यह बहुत खतरनाक है। कई जगहों में

बच्चे ऐसे गाड़ियों से गिरकर घायल हुए है। यह छात्रों की सुरक्षा की बात है। इसलिए यह भी शिक्षा के एक नई चुनौती है।

शिक्षा की एक नई चुनौती है 'लड़कियों की सुरक्षा'। बच्चों को मा-बाप बहुत तैयारियाँ करके स्कूल भेजते है। लेकिन रास्ते में वह सुरक्षित नहीं है। कुछ दिनों के पहले ट्यूषन जाते वक्त अपहरण हुए अबिगेल सारा रैजी नामक एक बच्ची इसका उदाहरण है। सामाजिक माध्यमों के मदद के कारण उस छोटी-छह साल के बेटी को वापस मिला। ऐसे अवस्था में माँ-बाप बच्चों को विश्वास से स्कूल तक नहीं भेज सकते है। सरकार को बच्चों की सुरक्षा के लिए उचित कार्यवाइयाँ लेना चाहिए। लड़कियों की ही नहीं, लड़कों की

भी सुरक्षा शिक्षा की एक नई चुनौती है।

शिक्षा की नई चुनौतियों में से एक है सामाजिक माध्यमों का अधिक उपयोग। आजकल के बच्चों को हम 'ह्यय-टेक' पीढ़ी कहकर पुकारते है क्योंकि उनको मोबाइल फॉन जैसे उपकरणों के बारे में बहुत कुछ पता है। ऐसे बच्चों को सामाजिक माध्यमों में अधिक उपयोग से मानसिक एवं शारीरिक बीमारियाँ होते है। वह ज्ञान प्राप्त करने में नहीं बल्कि वाट्साप एवं फेस्बुक में समय बिताना ज़्यादा पसंद करते हैं। यह भी शिक्षा की एक चुनौती है। विज्ञान क्षेत्र में हम इतने आगे आए है लेकिन इसके पीछे कई सारे लोगों की मेहनत है। परंतु आज के बच्चे मेहनत करनी पसंद नहीं करता। वे मोबाइल में

समय बिताकर ज़िंदगी बिताना चाहता है। उनको यह बात पता नहीं है कि अपनी माँ-बाप के गुज़र जाने के बाद ही उनको उनकी क्रियाओं का बोध होगा। ऐसे बच्चे शिक्षा की एक नई चुनौती है।

आजकल हम सुनते हैं कि केरल के कॉलेजों में बहुत ज़्यादा सीट है। इसका मुख्य कारण, पढने के लिए बच्चे अब विदेश जा रहे हैं। प्लस टू कक्षा में पढते वक्त ही वे उसके बाद कानडा, यूरोप जैसे जगहों में जाने की और वहाँ बढने की तैयारियाँ करते हैं। परंतु इससे हमारे देश में छात्रों की संख्या कम होती जा रहे हैं। भारत का पहला प्रधानमंत्री श्री जवहरलाल नेहरू जी ने कहा है कि " आज के बच्चे कल के भविष्य है "। अगर आज के

बच्चे सब हमारा देश छोड़कर जाएँगे तो कल हमारा देश ही नही रहेगा। आज के बच्चे ऐसे विदेश जाने के मुख्य कारण यह है कि वहाँ यहाँ से अधिक पैसा एवं सुख मिलता है। हिंदी साहित्य के प्रतिभाशाली कवि श्री सुमित्रानंदन पंत जी ने कहा है कि "सुख - दुःख के मधुर मिलन से ही जीवन परिपूर्ण हो जाता है"। हमें सुख एवं दुःख भी प्राप्त करना है। फिर ही जीवन सफल हो जाएगा। मशहूर हिंदी कवि श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान की 'मुर्झाया फूल' नामक कविता में कवि कहते हैं कि माँ - बाप को उनके अंतिम समय में पालन करना है। परंतु विदेश में बच्चे जाने से हमारे देश में माँ - बाप अकेले पड़ जाएँगे। युवा पीढ़ी देश छोड़ने से हमारे देश की प्रगति के

लिए काम करने के लिए कोई भी नहीं बचेगा। यह हमारे देश को गहरा चोट पहुँचाएगा। इसलिए यह शिक्षा की नई चुनौती है।

ऐसे हमारे देश के शिक्षा क्षेत्र में आजकल कई नए-नए चुनौतियाँ जड़-पकड़ रहा है। इन सब का समाधान एक हद तक हमारा सरकार कर रहे है। पर हमें भी हमारा दायित्व निभाना है। सरकार के साथ आम जनता को भी शामिल होकर इन चुनौतियों को सामना करनी है और हमारे शिक्षा तथा छात्रों को एक नया मार्ग दिखाकर देश की प्रगति के लिए काम करना चाहिए। सब खुशी से, सादगी से ज्ञान प्राप्त करके जीना जरूरी है।

सारे बच्चों को स्कूल भेजिए

शिक्षा का महत्व समझिए

बच्चों को उनके हक से वंचित न करें।

जाति - प्रता अभिशाप है

जिंदगी को ही नशा बनाइए

सब पढ़े, सब बढ़े

शिक्षा की नई चुनौतियों का 'सामना कीजिए'